कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.... 3630360 15/22

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ---

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ..... इतिहास .....

परीक्षा का दिन ..... मंगलवार .....

दिनांक ..... 17 मार्च, 2020 .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

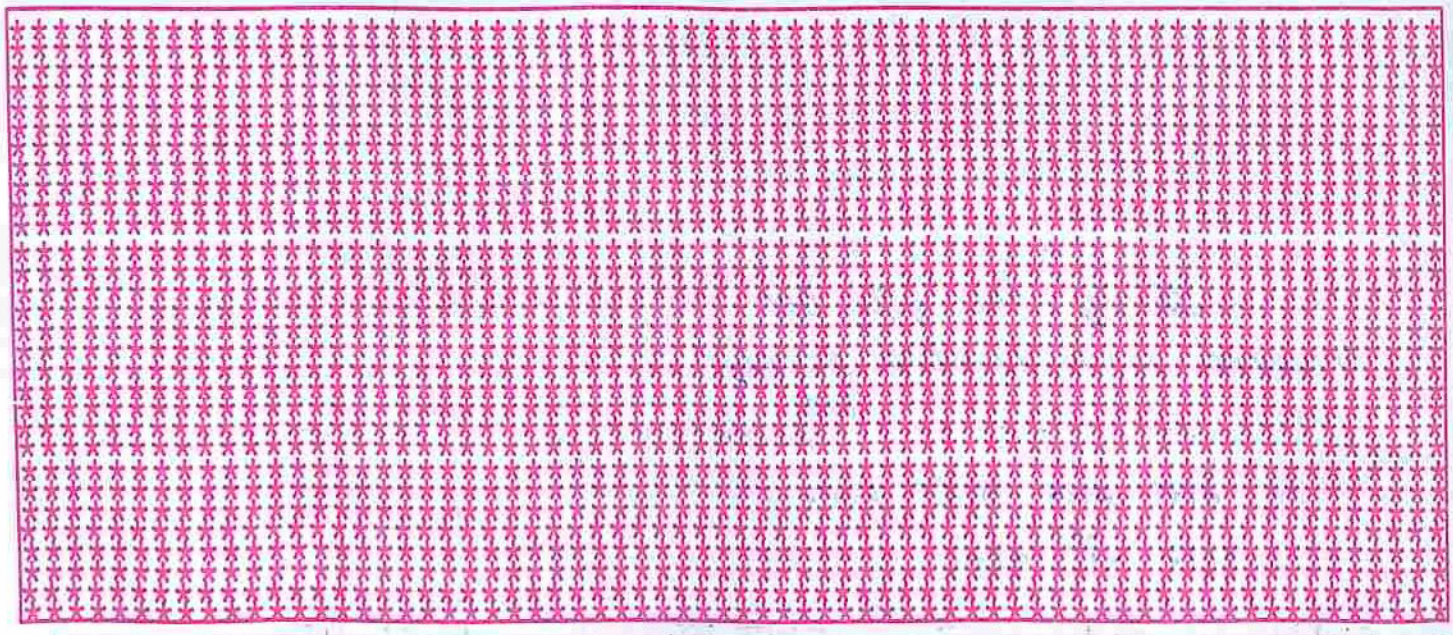
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020



परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[खण्ड - अ]

1. ----------?
उत्तर- 'त्रिपिटक' बौद्ध धर्म से संबंधित है। ये तीन है-
(i) सुतपिटक
(ii) विनयपिटक
(iii) अभिधम्म पिटक

2. ----------?
उत्तर- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर प्रथम व बुक्का प्रथम द्वारा तुंगभद्रा नदी के किनारे 1336 ई. में की गई।

3. ----------?
उत्तर- अश्वघोष कनिष्क (कुषाण शासक) के दरबार में रहते थे। इनकी रचना बुद्धचरित, सारिपुत्र प्रकरण, सूयलिंकार, सौंदरानंद महाकाव्य है।

4. ----------?
उत्तर- सिकन्दर व पोरस के मध्य झेलम नदी के किनारे युद्ध हुआ जिसमें सिकन्दर विजयी रहा।

5. ----------?
उत्तर- कनिष्क के शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिसमें बौद्ध हीनयान व महायान में विभक्त हो गया।

6. ----------?
उत्तर- मिलिन्दपन्हो के अनुसार मेनाण्डर ने नागसेन से बौद्ध ~~अध्यात्मक~~ अध्यात्म शास्त्र से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही पाकर बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	7.	----------?
	उत्तर-	अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर 26 अगस्त 1303 ई. में अधिकार कर लिया।
	8.	----------?
	उत्तर-	महाराणा प्रताप का जन्म कुम्भलगढ़ के बादल महल में हुआ, जिसे ~~कटारगढ़~~ कटारगढ़ भी कहते हैं।
	9.	----------?
	उत्तर-	राव चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का प्रताप' इसलिए कहा जाता है क्योंकि मेवाड़ के प्रताप ने स्वतन्त्रता और संघर्ष के पथ पर चलकर जो कार्य किया वो ~~महाराणा~~ मारवाड़ के राव चन्द्रसेन ने शुरू किया अर्थात् ~~दोनों~~ दोनों ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
	10.	----------?
	उत्तर-	महाराणा कुम्भा को 'हिन्दु सूरत्राण' (हिन्दु बादशाह) मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों पर विजय पाने के कारण कहा जाता है।
		[खण्ड - ब]
	11.	----------?
	उत्तर-	चाणक्य की 'अर्थशास्त्र' की मुख्य विषय-वस्तु मौर्य साम्राज्य की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि का वर्णन है। इसमें राज्य की उत्पत्ति से सम्बन्धित जानकारी भी मिलती है। चाणक्य इतिहास में इतिवृत्त, पुराण, आख्यान, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि सम्मिलित करता है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12. ---------?

उत्तर- सिन्धु-सरस्वती के नगर नियोजन की दो विशेषताएँ:-

सड़कें :-

(i) सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी थे लगभग 9, 12 तथा 34 फीट तक चौड़ी होती थी। 34 फीट वाला राजमार्ग रहा होगा।

(ii) जल निकास ~~प्रबंध~~ प्रणाली :-

जल निकास प्रणाली के लिए नालियाँ बनी हुई थी जो आधुनिक विकसित पेरिस व लन्दन शहर से उन्न थी।

13. ---------?

उत्तर- हालांकि हर्षवर्द्धन महायान बौद्ध धर्म का उपासक था किन्तु उसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। वह विद्वानों के अपनी आय का ¼ भाग पुरस्कार के रूप में देता था। कन्नौज तथा प्रयाग सभा में उसने सभी धर्मों के ~~अवलम्बा~~ अनुयायी को बुलाया जिसमें ब्राह्मण धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म के विद्वान शामिल थे, उन्हें दान भी दिया था। इस प्रकार वह एक ~~धर्म~~ धार्मिक सहिष्णु शासक था। अशोक के समान धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया।

14. ---------?

उत्तर- यूनानी मुद्रा ने भारतीय मुद्रा क्षेत्र को प्रभावित किया क्योंकि पहले पंचमार्क या आहत सिक्के (जिन पर केवल चित्र होते थे) प्रचलित थे मगर युनानियों ने सर्वप्रथम ऐसे सिक्के प्रचलित किये जिन पर शासकों के नाम, उपाधि, तिथि आदि अंकित होते थे। ये श्रेष्ठ धातु के बनाये जाते थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि युनानी ने मुद्रा क्षेत्र को प्रभावित किया।

PTO

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. ----------?

उत्तर- यदि हम्मीर देव चौहान की जगह मैं होती तो निम्न प्रयास करती -

(i) अलाउद्दीन खिलजी के सिसंधि वाले षड्यन्त्र में न पड़कर उस पर आक्रमण करती।

(ii) अपने पड़ौसी राज्यों से मित्रता रखती।

(iii) रणमल तथा ~~रतिमाल~~ रतिपाल जैसे देशद्रोहियों को उच्च पद न देकर निर्वासित कर देती।

16. ----------?

उत्तर- 1857 की क्रांति को जनक्रांति की संज्ञा इसलिए दी गई है क्योंकि भारतीय जनता ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ युद्ध शुरू किया तथा बड़ी मात्रा में आम जनता ने भी भाग लिया। इसको रसेल व मॉलिसन ने भी स्वीकारा।

17. ----------?

उत्तर- बंगाल विभाजन 1905 व लार्ड कर्जन (वायसराय) के समय हुआ। यह 16 अक्टुबर 1905 को लागू हुआ।

18. ----------?

उत्तर- विजय सिंह पथिक का मूल नाम भूपसिंह था। इन्होंने बिजौलिया किसान आन्दोलन (1913-22) तक का नेतृत्व किया तथा बेगूँ किसान आन्दोलन का भी नेतृत्व किया।

USER-167/2020

परीक्षक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

[खण्ड - स]

19. ---------- ---?

उत्तर- प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान उन्नत अवस्था में था यह निम्नलिखित विद्वानों से स्पष्ट होता है—

(i) दक्ष व भास्कर :-

ब्रह्मा ने सर्वप्रथम दक्ष व भास्कर को चिकित्सा का आयुर्वेद ज्ञान दिया। ~~भास्कर ने~~ दक्ष प्रजापति ने वह ज्ञान अश्विनी कुमारों को दिया उन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में जड़ी - बुटियां लगाई।

(ii) सुश्रुत :-

महर्षि सुश्रुत ने 'सुश्रुत संहिता' की रचना की जिसमें शल्य चिकित्सा का वर्णन है। इसने शल्य क्रिया के आठ अंग बताए हैं— कोमार भृत्य, शालाक्य, वाजीयन, अगद, कार्य विधा, भूत विधा आदि।

(iii) चरक :-

चरक ने 'चरक संहिता' की रचना की।

(iv) वसह वाग्भट्ट :-

वाग्भट्ट ने 'अष्टांग हृदय' नामक आयुर्वेद ग्रन्थ की रचना की जिसमें हृदय, नेत्र, उदर, आपस्तम्ब आदि व्याधियों का निदान बताया।

(v) कालीबंगा व लोथल के साक्ष्य :-

कालीबंगा व लोथल में एक खोपड़ी मिली है जिसमें कुछ से छेद है जो कुछ भरे हुए हैं, इससे उन्नत चिकित्सा की जानकारी मिलती है।

(vi) वैदिक काल की चिकित्सा :-

ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद में औषधियों से संबंधित जानकारी है वेदों के तीन विषय है - प्रकृति, ईश्वर, मानव से है।

इस प्रकार प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान उन्नत अवस्था में था।

PTO

BSEB-767/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

20. ---------- ?

उत्तर- 'अशोक ने धम्म के प्रतिपादन हेतु व्यावहारिक उपाय किए।' यह निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है-

(i) युद्ध नीति का त्याग :- अशोक ने धम्म की क्रियान्विती के लिए युद्ध नीति का परित्याग कर दिया ताकि बलपूर्वक कोई भी धम्म न स्वीकारे।

(ii) धम्ममहामात्रों की नियुक्ति :- अशोक ने विभिन्न सम्प्रदायों में सामंजस्य हेतु धम्म महामात्रों की नियुक्ति की ताकि प्रजा में उत्पन्न विवादों को निपटाया जा सके।

(iii) प्रतिवेदकों की नियुक्ति :- अशोक ने प्रतिवेदकों की नियुक्ति कि की जो राजा को हर व्यक्ति के दुःख हर जगह, हर समय सूचित करते रहते थे।

(iv) लोककल्याण कारी कार्य :- अशोक ने झील, मकबरा तालाब, सरायों आदि का निर्माण कराया। जिससे प्रजा धम्म के सिद्धान्त में विश्वास कर सके।

(v) पितृवत शासन का सिद्धान्त :- अशोक ने सर्वप्रथम पितृवत् शासन का सिद्धांत दिया अर्थात राजा को पिता व प्रजा को पुत्र बताया गया। उसने अभिषेक के दिन सभी बन्दियों को मुक्त कर दिया तथा दण्ड नीति को उदार बनाया।

(vi) धम्म के सार्वभौमिक सिद्धान्त :- धम्म में अहिंसा, आडम्बरहीनता, सहिष्णुता आदि सिद्धांतों को अपनाया जो प्रजा कल्याण हेतु सहायक थे।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

21. ---------- ?

उत्तर- रुद्रदमन ने जूनागढ़ अभिलेख 72 शक संवत् अर्थात् 150 ई. में बनाया। इससे निम्न जानकारियाँ प्राप्त होती है -

(i) सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार :-

सुदर्शन नामक झील गिरनार में चन्द्रगुप्त मौर्य (पुष्यगुप्त गवर्नर) ने बनवाई थी। रुद्रदमन के शासन काल में इसका मुख्य बांध टूट गया था जिसका पुनर्निर्माण बहुत खर्चीला था मगर रुद्रदमन ने अपने निजी कोश से धन व्यय करके उसका जीर्णोद्धार करवाया। यह उसके उदारता को दर्शाती है।

(ii) संस्कृत भाषा को बढ़ावा देना :-

रुद्रदमन ने जूनागढ़ अभिलेख का निर्माण करवाया जो कि संस्कृत भाषा में है जो कि उसकी संस्कृत भाषा नीति को स्पष्ट करता है।

(iii) सैन्य अभियान :-

जूनागढ़ अभिलेख से उसके सैन्य अभियानों की जानकारी भी प्राप्त होती है। उसने गौतमपुत्र शातकर्णी के वंशज से दो प्रदेश छिने तथा योद्धेयों पर उसकी विजय भी उसका बोध करता है। इसका साम्राज्य मालवा, गिरनार, उज्जैन, कोंकण आदि तक विस्तृत था।

(iv) व्यक्तित्व की जानकारी :-

रुद्रदमन का जूनागढ़ अभिलेख उसके व्यक्तित्व की जानकारी भी प्राप्त करवाता है, वह उदार शासक था इसलिए सुदर्शन झील का निर्माण करवाया। उसने बड़ी मात्रा में सिक्के जारी किया तथा महाक्षत्रप की उपाधि धारण की।

PTO

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

22. ----------?

उत्तर - तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.) को मोहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान III के बीच हुआ जिसमें पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ। इसके निम्न कारण थे -

(i) दूरदर्शिता तथा कूटनीति का अभाव :- पृथ्वीराज चौहान हालांकि वीर व पराक्रमी योद्धा था मगर उसमें कूटनीति तथा दूरदर्शिता का अभाव था।

(ii) पड़ोसी राज्यों से शत्रुता :- जब मोहम्मद गौरी ने 1178 ई. में गुजरात के शासक भीम II पर आक्रमण किया तो उसकी सहायता न करना उसकी भूल थी। कन्नौज के गहड़वाल शासक जयचन्द्र की पुत्री का हरण भी उसके लिए शत्रु का कार्य किया क्योंकि जयचन्द्र ने मोहम्मद गौरी को आक्रमण के लिए पत्र भेजा। महोबा राज्य को भी 1182 ई. में अपने साम्राज्य में मिला लिया।

(iii) भागती तुर्की सेना पर आक्रमण न करना :- तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई.) में पृथ्वीराज ने तुर्की सेना को भगा दिया। मोहम्मद गौरी गोविन्दराज की बर्छी से घायल हो गया तब पृथ्वीराज ने तुर्की सेना पर आक्रमण नहीं किया इसलिए मोहम्मद गौरी पुनः आ धमका।

(iv) विलासितापूर्ण जीवन :- पृथ्वीराज चौहान संयोगिता से विवाह के पश्चात् वह विलासितापूर्ण जीवन जीने लगा तथा राजकार्यों में ध्यान कम दिया जो उसकी पराजय में सहायक बना।

BSER-16/7/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23. ----------?

उत्तर- प्लासी का युद्ध :- यह 23 जून 1757 को अंग्रेजों तथा सिराजुद्दौला के बीच हुआ। यह लड़ाई वीरता नहीं बल्कि विश्वासघात व षड्यन्त्र का परिणाम थी। क्योंकि इसमें अंग्रेजों ने नवाब के शत्रुओं को अपनी तरफ मिला लिया और इन्होंने नवाब को परास्त कर दिया।

युद्ध का घटनाक्रम :-

सिराजुद्दौला के पास 50,000 सैनिक थे जबकि अंग्रेजों के पास 950 पैदल, 1200 तोपची, 2100 घुड़सवार सैनिक थे। परन्तु अंग्रेजों ने अमीरचन्द्र, दुर्लभ राय, घसीटी बेगम, राजवल्लभ, शौकत जंग तथा नवाब का सेनापति मीर जाफर को अपनी तरफ मिला लिया। युद्ध से पूर्व अंग्रेजों ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाने की शर्त तथा अमीरचन्द्र को पैसे का लालच दिया।

युद्ध में मीर जाफर, दुर्लभ राय आदि ने अपनी सैनिक टुकड़ियों को युद्ध करने का आदेश नहीं दिया फलस्वरूप बादशाह की सेना भाग खड़ी हुई तथा मीर जाफर के पुत्र ने मीरन ने सिराजुद्दौला की हत्या कर दी। इस प्रकार कहा जाता है कि "प्लासी का युद्ध एक सौदा था जिसमें बंगाल के धनी सेठों ने नवाब को अंग्रेजों के हाथों बेच दिया।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्लासी की लड़ाई विश्वासघात और षड्यन्त्र का परिणाम थी जिसमें बादशाह के विश्वासपात्रों ने उनके साथ विश्वासघात किया बल्कि वो इससे अनभिज्ञ थे। इससे सिराजुद्दौला के पश्चात् मीर जाफर को नवाब बनाया गया।

PTO

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

24. ----------?

उत्तर- हम यह दावे के साथ कह सकते हैं कि 1857 की क्रांति भारतीय नरेशों के असहयोग असहयोग के कारण असफल हुई।

- लार्ड कैनिंग जो कि उस समय भारत के गवर्नर जनरल थी उन्होंने भारतीय नरेशों को 'क्रांति रोकने वाले बाँध' कहा है। एक अन्य अंग्रेज अधिकारी ने कहा है कि "यदि पंजाब यानी जिन्द तथा अन्य भारतीय राजा हमारा साथ नहीं देते तो भारत हमारे हाथों से चला जाता।"
- भारतीय नरेशों ने केवल असहयोग ही नहीं किया बल्कि अपनी सेनाओं के माध्यम से क्रांतिकारियों को दबाने का प्रयास भी किया। इसका प्रमुख कारण अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली रियायतें थी। राजस्थान के शासकों ने तो पंजाब, हरियाणा आदि विद्रोहों को दबाने हेतु सेना भेजा।
- बहादुर शाह जफर II भी कमजोर व वृद्ध शासक था इसलिए वह क्रांति का ~~नेतृत्व~~ नेतृत्व सम्भालने में असमर्थ था यदि उस जगह शक्तिशाली भारतीय शासक होता जो सबको अपनी नीतियों के अनुसार चला पाने में समर्थ होता तो अवश्य अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ता।
- भारतीय शासकों में दूरदर्शिता के अभाव था और उन्होंने क्रांतिकारियों को रसद, हथियार आदि सुविधाएँ उपलब्ध नहीं करवाई यदि भारतीय नरेश क्रांतिकारियों के साथ खड़े होते तो अंग्रेजो को भेष बदलकर यूरोप जाना पड़ता।

BSER-167/2020

शिक्षक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

25. उत्तर- "राजा राममोहनराय के धार्मिक सुधार आज भी प्रासंगिक हैं।"

उन्होंने समाज में व्याप्त बुराईयों का विरोध किया। इसके लिए उन्होंने कलकत्ता में 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की।

(i) उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछुत, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा आदि का विरोध किया।

(ii) स्त्री शिक्षा का प्रयास किया तथा बालिका शिक्षा हेतु विद्यालय की नींव डाली।

(iii) विधवाओं के पुनर्विवाह हेतु प्रयत्न किया।

(iv) सती प्रथा का विरोध किया और समाचारपत्रों के माध्यम से सती प्रथा के विरुद्ध जनमत तैयार कर लार्ड विलियम बैंटिक से सती प्रथा निषेध अधिनियम (धारा 17) बनाया गया जिसमें सती प्रथा पर रोक लगाई गयी।

(v) प्रारंभ में सती प्रथा निषेध अधिनियम केवल बंगाल के लिए था बाद में 1930 में मद्रास व बंबई में लागू हुआ। तत्पश्चात सम्पूर्ण भारत में लागू हुआ।

(vi) उन्होंने वैदिक आधार पर प्रथाओं का विरोध किया उन्होंने कहा हमें वे सब प्रथाएँ त्याग देनी चाहिए जो हमारे तर्क की कसौटी पर खरी ना उतरे।

(vii) समाज के दलित, गरीब, स्त्री, विधवा स्त्री आदि के लिए अथक प्रयास किया।

PTO

BSEB-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

26. ----------?

उत्तर- अर्जुनलाल सेठी :-

(i) प्रारंभिक जीवन :-

अर्जुन लाल सेठी का जन्म 1880 ई. में जयपुर रियासत में हुआ। इन्होंने 1907 में जैन प्रचारक समिति की स्थापना की। जो आगे चलकर कॉलेज में परिणित हुई। वे एक उद्योगपति थे जो क्रांतिकारियों की कार्यप्रणाली से प्रभावित थे।

(ii) क्रांतिकारियों से सम्बन्ध :-

अर्जुनलाल सेठी रास बिहारी बोस के अनुयायी थे। उन्होंने काकोरी काण्ड के दोषी क्रांतिकारी अशफाक उल्लाखां को शरण दी। दिल्ली षड्यन्त्र केस की रूपरेखा सेठीजी की थी। आरा हत्याकाण्ड (1913) में इन्हें जेल भी हुई। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लिया।

(iii) अन्य कार्य :-

अर्जुनलाल सेठी स्वाधीनता प्रेमी थे। जब उन्हें कि जयपुर के प्रधानमंत्री का पद सौंपा जा रहा था, तब उन्होंने कहा "यदि अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से कौन भगाएगा?" और पद ग्रहण नहीं किया। भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्हें प्रांतीय डिक्टेटर चुना गया। उसकी कुशलता इस बात से स्पष्ट होती है कि जब गांधीजी आमेर आये तो उनसे मिलने उनके घर गये। उनकी मृत्यु 1941 ई. को हुई।

इस प्रकार अर्जुनलाल सेठी का क्रांतिकारी आन्दोलन में योगदान स्वयंसिद्ध हो जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

27. ----------?

उत्तर- जनजातियों के समग्र सामाजिक उत्थान हेतु निम्न प्रयास किये जाने चाहिए -

(i) शिक्षा का प्रसार करके :- जनजाति को शाश्वत नैतिक मूल्यों वाली शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वो अपने आप को सभ्य बना सके और अपने हित-अहित को समझ सके।

(ii) आर्थिक तथा राजनीति आरक्षण :- जनजातियों को राज्य में भागीदारी हेतु उचित आरक्षण सुविधा दी जानी चाहिए। हमारे नेता महात्मा गाँधी तथा अम्बेडकर ने पूना समझौते में (26 सितम्बर 1932) आरक्षण की सुविधा प्रदान की। हमारे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 330 व 332 में अनुसूचित जाति व जनजाति को राजनीतिक आधार पर तथा अनुच्छेद 335 के आधार पर लोक सेवाओं में आरक्षण प्रदान किया गया है। जिसमें अनु. जाति 84 तथा अनु. जनजाति के लिए 47 सीटें आरक्षित है।

(iii) सुधारवादी आन्दोलन :- विभिन्न धार्मिक, राजनैतिक सुधारवादी आन्दोलन चलाकर चेतना लानी चाहिए। जिस प्रकार गोविन्द गुरु ने सम्प सभा व भगत आन्दोलन के माध्यम से जगाई।

(iv) प्रथाओं के निषेध करने हेतु कानून बनाए :- जिस प्रकार राजा राममोहन राय ने सती प्रथा निषेध, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कानून बनाए, उसी प्रकार सरकार को ऐसे कानूनों का निर्माण करना चाहिए।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

28. ---------- ---------- ?

उत्तर- चोलकालीन प्रशासन :-

(i) राजा :- कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा व्यवस्थापिका के प्रमुख को राजा कहते थे। राजा के अंग रक्षकों निजी सेवकों को उदक्कुटुम्ब कहा जाता था। उच्च स्तरीय अधिकारियों को मिक्कतरम कहा जाता था।

(ii) मन्त्रिपरिषद् :- राजा की सहायतार्थ एक मंत्रिपरिषद् होती थी जो राजा को विभिन्न कार्यों में परामर्श देती थी। ये शासन की निरंकुशता पर रोक लगाने का कार्य करते थे।

(iii) सैन्य संगठन :- चोलों के पास शक्तिशाली सेना थी। इनके पास हाथी, घुड़सेना, पैदल, रथ सेना आदि थी। राजेन्द्र प्रथम ने इण्डोनेशिया, मलेशिया, श्रीलंका आदि क्षेत्रों पर अधिकार किया तथा राजराज प्रथम ने भी श्रीलंका तक के क्षेत्र विजित किये। राजेन्द्र प्रथम ने श्रीलंका के महेन्द्र पंचम को पराजित कर उसकी राजधानी अनुराधापुरम पर अधिकार कर लिया। ये उसकी शक्तिशाली नौ सेना का वर्णन करती है। उसके समय में बंगाल की खाड़ी चोल झील बन गई थी। सेना में हस्ति सेना के प्रधान को कुंजिर मल्लर तथा घुड़सवारी प्रधान को कर खरचेवगैत कहा जाता था। सेना के प्रमुख को नायक तथा महासेनापति कहा जाता था।

परीक्षक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या

कर व्यवस्था :-

(iv) चोलों द्वारा एक-तिहाई भाग कर के रूप में लिया जाता था। प्रमुख कर इस प्रकार हैं -

आयम - राजस्व कर

मनैइरै - गृह कर

कढैइरै - व्यापारिक

आजीवकाशु - आजीविका पर लगने वाला कर

इस प्रकार चोलों द्वारा कई कर लिये जाते थे मगर उनका उपयोग निर्माण कार्यों तथा जनकल्याण में किया जाता था।

न्याय व्यवस्था :-

(v) चोलों में न्याय हेतु एक ~~सभा~~ परिषद् बनी हुई थी, इसमें दीवानी, फौजदारी, धार्मिक आदि विवादों को सुलझाया जाता था। अन्तिम न्याय राजा के पास था।

स्थानीय स्वशासन :-

(vi) चोलकालीन स्थानीय स्वशासन आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की प्रमुख शाखा है जो उनके शासन कार्यों को अद्भुत बनाती है। उनके प्रान्त वलनाडु, नाडु (जिला), कुरिम (ग्राम) में बना बटा हुआ था। इन्हें गणराज्यों की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि ये स्वतन्त्र रूप से कार्य करते थे। इनका निर्वाचन जनता द्वारा किया जाता था। इनके लिए उर, सभा या महासभा बनी होती थी। यह वंशानुगत नहीं होता था। शासन इनके मामलों में नगण्य हस्तक्षेप करता था। चोल प्रशासन की यह सर्वाधिक प्रसिद्ध उपलब्धि रही है।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

29 ----------?

उत्तर- महात्मा गाँधी :-

जीवन परिचय :-

(i) महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर में हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी जो से राजकोट रियासत के दीवान थे। इनकी माता का नाम पुतली बाई था। ये 1888 ई. में इंग्लैण्ड गए तथा वहाँ से बैरिस्टर की शिक्षा प्राप्त की। भारत में राजकोट में वकालत करने लगे ये 'दादा अब्दुल्ले एण्ड कम्पनी' के मुकदमे से दक्षिण अफ्रीका गए तथा वहाँ पर सत्याग्रह आरम्भ किया और वहीं 'इण्डियन ओपिनियन' नामक समाचार पत्र निकाला। 1915 में मो० गाँधीजी भारत आए। 1916 में साबरमती आश्रम की स्थापना की। इनकी मृत्यु 30 जनवरी 1948 में नाथूराम गोडसे ने की।

(ii) खेड़ा आन्दोलन :-

गाँधीजी ने गुजरात में 1918 में खेड़ा आन्दोलन चलाया तथा किसानों के अधिकार दिलाकर दिलाकर राजनीतिक चेतना भरी।

(iii) चम्पारण सत्याग्रह :-

1917 में चम्पारण में नील किसानों के अधिकारों हेतु सत्याग्रह आरम्भ किया तथा किसानों को उनके अधिकार दिलाये।

(iv) अहमदाबाद आन्दोलन :-

अहमदाबाद में 1918 में उद्योगों में लगे श्रमिकों को उनके वेतन का हिस्सा दिलाकर उनमें राष्ट्रवादी चेतना भरी।

P.T.O.

ISER-167/2020

नामांक Roll No.

3	0	5	2	7	7	2

SS-13-Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2020

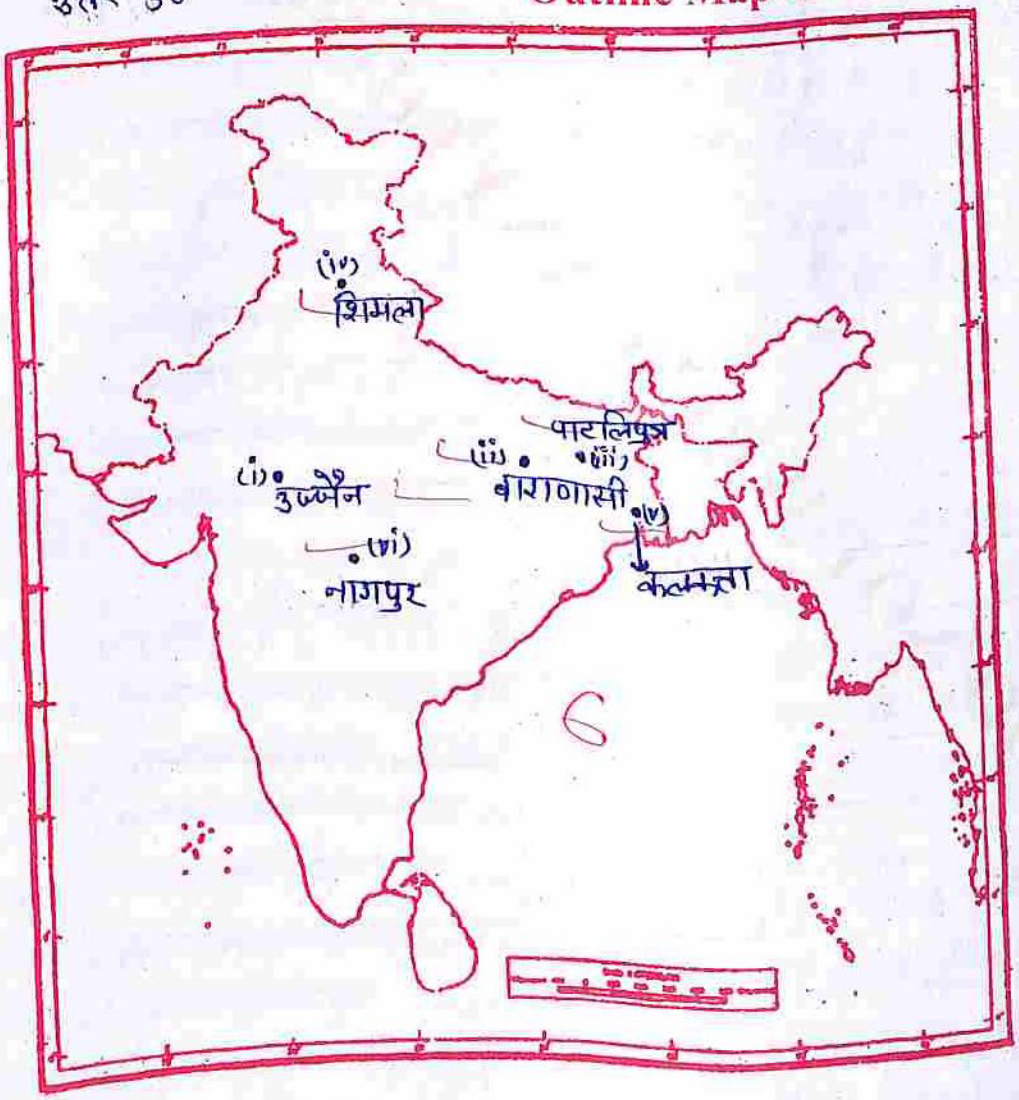
SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2020

इतिहास

HISTORY

उत्तर 30

Outline Map of INDIA



PTO

DO NOT WRITE ANYTHING HERE

क द्वारा अंक | प्रश्न संख्या

(v) असहयोग आन्दोलन :-

↓ अगस्त 1920 को गाँधीजी ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध असहयोग करने पर बल दिया। उन्होंने जनता में इस आन्दोलन से जागृति फैलाई ये आन्दोलन 1919 के मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड, भारतीयों से किये गए अन्याय आर्थिक, राजनैतिक आदि, जालियावाला बाग हत्याकाण्ड आदि के कारण शुरु किया। इसमें स्वदेशी तथा बहिष्कार पर जोर दिया गया।

(vi) सविनय अवज्ञा आन्दोलन :-

यह 1930 में गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु किया। यह अंग्रेजी अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध शुरु किया गया अहिंसात्मक आन्दोलन था।

★ दाण्डी यात्रा :-

गाँधीजी ने 12 मार्च 1930 को अपने 78 समर्थकों के साथ 240 मील की दुरी तय की तथा 6 अप्रेल 1930 को नमक हाथ में लेकर नमक कानून तोड़ा। सुभाषचन्द्र बोसे ने इसकी तुलना नेपोलियन की एलबा से पेरिस लॉन्च से की।

★ गाँधी-इर्विन समझौता :-

5 मार्च 1931 को लार्ड इर्विन ने गाँधी जी से समझौता किया जिसे दिल्ली पैक्ट कहा जाता है जिसमें गाँधीजी ने उनसे कुछ माँगे रखी परन्तु उसे स्वीकार करने एक बार स्वीकार कर लिया तब गाँधीजी की द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सित 1931) में सम्मिलित हुए मगर उनकी माँगे न मानी तो पुनः भारत आकर सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु कर दिया।

P.T.O.

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(vii) भारत छोड़ो आन्दोलन :-

8 अगस्त 1942 के बंबई कांग्रेस अधिवेशन में इस आन्दोलन को स्वीकार गया। इसमें गाँधीजी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। 9 अगस्त 1942 को प्रमुख गिरफ्तार कर लिये गए। फिर भी गाँधीजी की लोकप्रियता के कारण यह नेतृत्वविहीन आन्दोलन ब्रिटिश सरकार को संशकित कर दिया।

(viii) मूल्यांकन :-

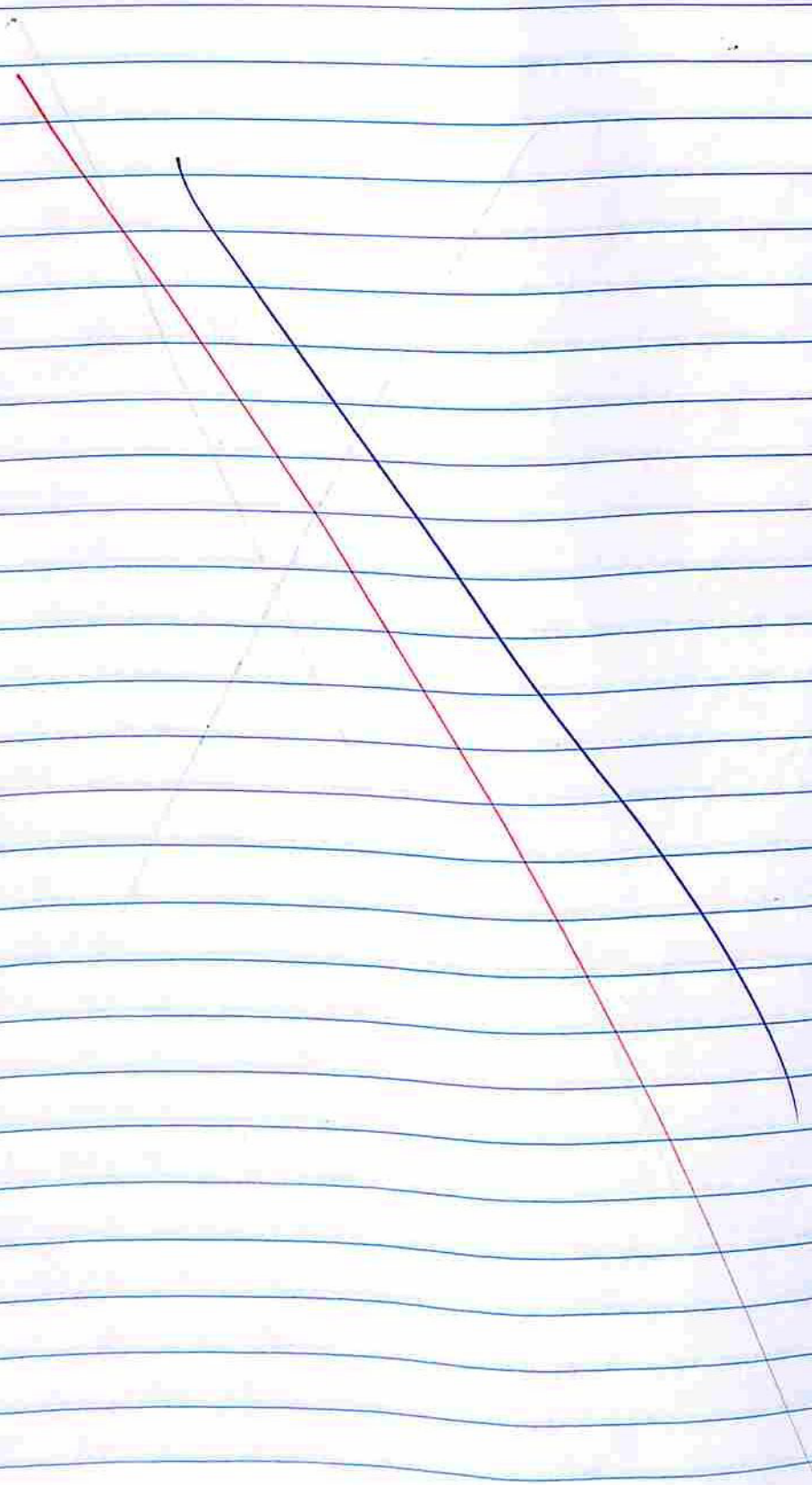
इस प्रकार महात्मा गाँधी को राष्ट्रपति कहा गया (सुभाषचन्द्र बोस द्वारा)। जनता उनके इशारे पर बड़ा-से-बड़ा त्याग करने को तत्पर थी। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को कई बार चुनौतियाँ दी मगर अहिंसा के पथ पर ही चलकर।

30

समाप्त

BSER 167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर



BSER-167/2020